

धूम्रगिरि... चर्चवाधालिनी...
 गसद्यालिकानुपद...
 स्यन्दयदुप...
 गकयजामालिनी...
 लु॥ गद्वजालिनी...
 मंगलासिद्धिल...
 कजालन्द...
 नानन्दवस्य...

नामिक रेन विरेन वसय धनस्थगताय दानत्वाय नार्धं लिख दानत्वाय न
 धर्माय ॥ पूर्वमुतामहायथा रेनयनमहात्मना गंगालिङ्गविनिर्दिष्टा निर्मिता
 सप्तमं ध्वनी ॥ ॐ गिष्ठी लिखत किं समस्तमहात्मालिनीदण्डकसंवेससोय
 १८ नमः श्री कृष्णाय ॥ धीनूत वाचा ॥ ॐ नमस्तुते महामाये श्री कृष्णाय नमः ॥ नमो
 किनीनिगुडात्तानादाख्यविन्दुमालिनी ॥ त्रदहाच्च समस्त न नचलविश्वधामिनि ॥
 हाकृष्णलनीनिधिरुसमाध्याववस्ति ॥ ॥ तामस्तु ग्याग्निमध्वरुधामवायियनायन ॥ ॐ
 वाचविग्रहावल्कलकाय इत्ययुयिणि ॥ वालाग्रगंधास्तु नूनं चान्यथाय ॥ ॐ
 वाचविग्रहावल्कलकाय इत्ययुयिणि ॥ ॥ सकलाख्यमहा ॥ ॥ ॐ नमस्तुते ॥ ॥ ॐ नमस्तुते ॥ ॥

कनादमध्वरुधामानेकेकारिणि ॥ ॥ ॐ नमस्तुते ॥ ॥ ॐ नमस्तुते ॥ ॥ ॐ नमस्तुते ॥ ॥ ॐ नमस्तुते ॥ ॥
 नानिहायवा ॥ ॐ नमस्तुते ॥ ॥ ॐ नमस्तुते ॥ ॥ ॐ नमस्तुते ॥ ॥ ॐ नमस्तुते ॥ ॥ ॐ नमस्तुते ॥ ॥
 येगायादनूलववस्ति ॥ ॥ ॐ नमस्तुते ॥ ॥ ॐ नमस्तुते ॥ ॥ ॐ नमस्तुते ॥ ॥ ॐ नमस्तुते ॥ ॥ ॐ नमस्तुते ॥ ॥
 स्फुटलालनगुयिणि ॥ ॥ ॐ नमस्तुते ॥ ॥ ॐ नमस्तुते ॥ ॥ ॐ नमस्तुते ॥ ॥ ॐ नमस्तुते ॥ ॥ ॐ नमस्तुते ॥ ॥
 द्वादशावलीकि ॥ ॐ नमस्तुते ॥ ॥ ॐ नमस्तुते ॥ ॥ ॐ नमस्तुते ॥ ॥ ॐ नमस्तुते ॥ ॥ ॐ नमस्तुते ॥ ॥
 यावधविनि ॥ ॐ नमस्तुते ॥ ॥ ॐ नमस्तुते ॥ ॥ ॐ नमस्तुते ॥ ॥ ॐ नमस्तुते ॥ ॥ ॐ नमस्तुते ॥ ॥
 रुचवादिनी ॥ ॐ नमस्तुते ॥ ॥ ॐ नमस्तुते ॥ ॥ ॐ नमस्तुते ॥ ॥ ॐ नमस्तुते ॥ ॥ ॐ नमस्तुते ॥ ॥
 चिन्ता ॥ ॐ नमस्तुते ॥ ॥ ॐ नमस्तुते ॥ ॥ ॐ नमस्तुते ॥ ॥ ॐ नमस्तुते ॥ ॥ ॐ नमस्तुते ॥ ॥

॥ यथायमयत्र गुडु वेत न्याग ॥ धूमधूर्य ॥ सर्ववर्ष धर्वा धर्वा गुडु तत्त्व निविशुत ॥ गकि मूल
 मरुत वृद्ध वीजनी जसम चिन्त ॥ नृगनी जसम साना यमसावा सुवेगा नि नि ॥ ज्याच विज या
 येक जयनी चायना जिगा ॥ सुवृज वीजम धूमनम सन य यमाच नि ॥ वधमा न्द कनी धर्वा बा
 उगाना ववस्ति ॥ लदिनी गकि मूल नम स वृद्ध सम चिन्त ॥ लमनी लामनी गीजी माया
 च कस्य वादिनी ॥ स्वच्छन्द रुचवी धर्वा का धउन्म रुचवी ॥ यवा गद्वर्षु च कस्य वायना ॥ ४
 यक किना शास्त्र च नास्व नृच ॥ पुनम ४ काया लिनी शिव ॥ नृच किनिमहा सायनम रुक्ष न
 सेच वि ॥ दृष्ट कट विष्ट डिष्ट तान कादि रुयान न ॥ नमामि दव दव गी नृवा प्रथ ॥ नृच वि नि
 ॥ काला मूर्खी वगवनी उगाय वीन मा मृग ॥ यो निना च वि या धर्वा गीजी त प्री सच स्व गी ॥ ५

१ मा २

स्य नार्द्ध गद विना मूर्खी गकि ॥ दिनी ॥ काष्टकी गुरु गदवी इर गे कात्यायिनी शिव ॥ गित्य
 किना समारया ता चक ॥ काष्टकायना ॥ वा गी मा रु ध्वनी चैव को मन्त्र प्रवृत्त था ॥ वा नृकी
 चैव मा रु ली चाम सु ली रयान न ॥ ॥ गी ली रु द व गी कला दृक विरु विरु ॥ से ली चैव
 दुन्म ॥ ग्रयी याम्या नि सत्य वा चली ॥ वायं वा चैव को धर्वा नि गी च सिमदा दना ॥ यवा गदव नृ
 ना का लान्म दुरुसा जय नि का ॥ च वि का मु र्क चैव धर्वा का वृष्टु वा रु र्म ॥ नृसिनी गानृ
 धुष्ट ४ का धउन्म रुचवी ॥ कया ली ली म र्ग चैव र्म र्गान चैव वा रु र्म ॥ गंधा काली उमा ध
 वी दव दूनी न मा मृग ॥ रु द काली मरु दवी च र्म म ॥ रु द या वरु ॥ मरु दू धम स दाना न
 नम रु ॥ गकि चू यि वि ॥ रु द ४ स्थानि च दाना न दयाना धक चू यम ॥ रु दाना र्थिना मरु साय

७ १

नमः श्रीमहादेवे नमः ॥ श्रीसम्यक्तामसुलानककमयदनिहिनानन्दशक्ति सूर्यमा
 सृष्टिन्यायचतुर्वर्गकूलकलगतयध्वकचान्यवर्द्धनचत्वार्यव्यंशकान्यव्यं
 ननविचतुनः ॥ अथ ॥ लिखकं दद्यात्तामसूक्तिमध्वरुसखरुलकलाविन्दयु
 व्यादमूडा ॥ वालंकोनवृद्धयनमगिवकलावकुदवीकमानां शीनाथचन्द्रययौ
 नवयूवययनयूगमरुदुसानं ॥ लिखंतिज्ञावगार्जयथमकलियोगकांका ॥ अथ ॥
 काजं भव्यादेयकृतिव्यानवयूवययनयूगमः ॥ अथ ॥ सगानी गाययिउवामय
 सकलवागुगानाकामानं ॥ अथ ॥ अमसुलवैवेविजमविमलंयूयसहाववृन्द
 दावसुदधानीकूलकमसकलमसुलकनयूवः ॥ सत्त्वानमिदंमहायेशुमलं ॥ अ
 ॥ मा ॥

कालियुगुडिगिवानि ॥ मध्वविद्यामसूक्तिमध्वरुसखरुलकलाविन्दयु
 सगुह्येननगरेमेनमध्वरुवनलेनवर्णीक ॥ अथ ॥ निशियक्तिमान्नायवृन्दमवर्णी
 सूर्यसमक ॥ ॥ अथ ॥ नाथा श्री ॥ अथ ॥ नाथा श्री ॥ अथ ॥ नाथा श्री ॥
 श्रीनाथाय वा पूज ॥ अथ ॥ नमः ॥ श्रीलिङ्गनाथाय वा पूज ॥ अथ ॥ नमः ॥
 श्रीकृष्णनाथाय वा पूज ॥ अथ ॥ अथ ॥ अथ ॥ अथ ॥ अथ ॥ अथ ॥ अथ ॥
 यकोथामिनीकृष्णनाथाय वा पूज ॥ अथ ॥ अथ ॥ अथ ॥ अथ ॥ अथ ॥ अथ ॥

१ संध्यावसुर्दिवायाका बालकमानयोवना लोकाद्विकलावति संय
दवीसकीर्तिगाथा॥ यागकालमहर्षि विद्यायां लब्धनामता॥ कामधनी
वमध्याक सायाद्रूपनरीनवी अर्द्धजोमहर्षि निहया सिद्धिसुन्दरी॥
सुमुखं सम्पुष्टं चैव वित्तं विस्तीर्णकथा॥ एकमुखं द्विमुखं त्रिमुखं चैव
चतुष्टयं मुखं तथा॥ चतुर्मुखं मध्यं मुखं च चापकं यत्रिकं तथा॥ सुकटं
यमपाणकं गच्छिष्येव मुखं मुखं॥ यत्र मुखं मुखं चैव मत्स्याकं मत्स्या
वनाहको॥ सिंहाकाकं महाकाकं पञ्चमुखं मुखं तथा॥ ॐ निमज्जामहे॥

सुमुखं सम्पुष्टं चैव वित्तं विस्तीर्णकथा॥ एकमुखं द्विमुखं त्रिमुखं चैव
चतुष्टयं मुखं तथा॥ चतुर्मुखं मध्यं मुखं च चापकं यत्रिकं तथा॥ सुकटं
यमपाणकं गच्छिष्येव मुखं मुखं॥ यत्र मुखं मुखं चैव मत्स्याकं मत्स्या
वनाहको॥ सिंहाकाकं महाकाकं पञ्चमुखं मुखं तथा॥

ॐ अक्रुमिकाय नमः ॥ ॐ अक्रुमिकाय नमः ॥ ॐ विष्णवे नमः ॥ ॐ विष्णवे नमः ॥
 हृत्गणानमः ॥ ॐ ५ वसे नमः ॥ ॐ हृत्गणानां च तथानमः ॥ ॐ यत्रैतानि निहितानि
 नमः ॥ ॥ ॐ ददामन्मया ॥ यत्रैतानि निहितानि ॥ सिसिद्धा ॥ सयकावगदेत्यसंवा ॥ यमा ॥
 पिणवास्तनव ॥ समस्तानि चान्नमिच्छामि ॥ यत्रैतानि निहितानि ॥ यिपीठिका ॥ कीटयन ॥ इकाया
 द्भुक्तिता ॥ कर्मनिवन्धवद्वा ॥ यत्रैतानि निहितानि ॥ सिद्धि ॥ सयकावगदेत्यसंवा ॥ यमा ॥
 नु ॥ यत्रैतानि निहितानि ॥ यत्रैतानि निहितानि ॥ यत्रैतानि निहितानि ॥ यत्रैतानि निहितानि ॥
 मगल ॥ यत्रैतानि निहितानि ॥ यत्रैतानि निहितानि ॥ यत्रैतानि निहितानि ॥ यत्रैतानि निहितानि ॥

दक्षि ॥ तस्माददं हृत्गणानि कर्माय हृत्गणानां च तथानमः ॥ यत्रैतानि निहितानि ॥ यत्रैतानि निहितानि ॥
 यत्रैतानि निहितानि ॥ यत्रैतानि निहितानि ॥ यत्रैतानि निहितानि ॥ यत्रैतानि निहितानि ॥
 कर्मनिवन्धवद्वा ॥ यत्रैतानि निहितानि ॥ यत्रैतानि निहितानि ॥ यत्रैतानि निहितानि ॥ यत्रैतानि निहितानि ॥
 यत्रैतानि निहितानि ॥ यत्रैतानि निहितानि ॥ यत्रैतानि निहितानि ॥ यत्रैतानि निहितानि ॥
 यत्रैतानि निहितानि ॥ यत्रैतानि निहितानि ॥ यत्रैतानि निहितानि ॥ यत्रैतानि निहितानि ॥

1827 I